'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) - 0.676 (2013)
Special Issue 33 : समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
January 2018

हिन्दी नाटक का उद्‌भव एवं विकास क्रम

प्रा. योगिता विष्णुपंत उशिर
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड, ता. नांदगाव जि. नाशिक

प्रवेश :-

चक्षु तथा श्रवण, रुप और अर्थबोध के स्थूल साधनतत्व है । साहित्य की जिस विधा का बोध मुख्यत: दृष्टि के माध्यम से होता है, उसे संस्कृत आचार्यो ने दृश्य काव्य की संज्ञा दी है । दृश्य काव्य को ही नाटक कहा गया है । नाटक में जीवन और समाज के विविध आयामों की अभिव्यक्ती होती है । इसीलिए नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि कहते है 'अवस्थानुकृत्यं नाटकम्' अर्थात अवस्थाओं की अनुकृति नाटक है । भारतीय साहित्य में नाट्य के लिए रुप और रुपक शब्द भी प्रचलित है । रुप शब्द मूलत: नेत्रों के देखने का द्योतन करता है । रुपक ऐसे प्रदर्शन को कहा जायेगा की जिसमें अभिनय करने वाला किसी न किसी के रुप हाव-भाव, वेशभूषा, बोलचाल आदि का ऐसा अनुकरण करे की उसका वास्तविक व्यक्ती से तनिक भी अंतर न हो सके ।

परिभाषा एवं स्वरुप-

'नाट्य' शब्द की व्युत्पत्ती संबंधी अनेक मत पाए जाते है । नाटक शब्द की व्युत्पत्ती दशकरुप में 'नट' धातु से मानी जाती है । पाणिनि के अनुसार भी ''नाटक शब्द की व्युत्पत्ती 'नट' धातु से हुई है । नट् का अर्थ होता है, अभिनय करना ।'' 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् ।' जीवन की अनुकृति करना नाट्य का प्रधान लक्ष्य होता है । नाटक का अर्थ अभिनय से जोडा गया है । यह अभिनय अनुकरण से होता है । यह अनुकरण अंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक चार प्रकार का होता है ।

संस्कृत के आचार्य भरतमुनि के नाट्य को पंचमवेद कहा है । इसमें संपूर्ण तीनों लोकों के भावों का अनुकरण है । ''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनमं ।'' पाश्चात्य विद्वानों ने भी नाटक को अनुकरण ही माना है अरस्तू ने नाटक को ट्रेजडी के रुप में स्वीकार किया और उसे जीवन के व्यापारों का अनुकरण माना है । ङ्कढीरसशवू ळी ळिारीळश्रू ळाळींरींळेप`ष रलींळेपङ्ग

सिसरो के अनुसार "Drama is a copy of life, a mirror of custom a reflection of truth" है ।

विक्टर ह्यूगो के अनुसार "Drama is a mirror in which nature is reflected"

वस्तुत: यह की नाटक अभिनयप्रधान होता है, और वह आनंद, उपदेश अथवा आदर्श आदि के लिए लिखा जाता है । संवाद और दृश्यों के माध्यम से विभिन्न चरित्रों, स्थितियों और भावों द्वारा वह प्रदर्शित भी किया जाता है ।

नाटक का विकास क्रम : भारत की नाट्य परंपरा काफी प्राचीन मानी जा सकती है । विभिन्न जनपदीय बोलियों में रचित सम्प्रति नाट्यधारा का विपुल साहित्य उपलब्ध होता है । संस्कृत और प्राकृत में प्रचुर मात्रा में नाटक लिखे गए । इस लौकिक परंपरा के उदाहरण पतंजलि द्वारा वर्णित 'कंस-वध' और 'बालिवध' नामक नाटक है। वस्तुत: संस्कृत की नाट्यधर्मी परंपरा के समानान्तर चली यह नाट्यधारा प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं से भी गुजरी।

हिंदी में नाटकों का वास्तविक विकास भारतेन्दु युग से माना जाता है । हम अध्ययन सुविधानुसार नाटक विकासक्रम को तीन युगों में बाँटेंगे ।